॥ ॐ श्री दत्तप्रसन्नोऽस्तु ॥

नारेश्वर निवासी ब्रह्मलीन महाराजश्री रंग अवधूत कृत

दत्त-बावनी

जय योगीश्वर दत्त दयाळ! तुंज एक जगमां प्रतिपाळ;
अत्र्यनसूया करी निमित्त, प्रगटयो जगकारण निश्चित।

ब्रह्माहरिहरनो अवतार, शरणागतनो तारणहार;
अंतर्यामी सत् चित् सुख, बहार सद्गुरु द्विभुज सुमुख.

झोळी अन्नपूर्णा कर मांह्य, शांति कमंडल कर सोहाय;
कयांय चतुर्भुज षड्भुज सार, अनंतबाहु तुं निर्धार. ६

आव्यो शरणे बाळ अजाण; ऊठ दिगंबर, चाल्या प्राण!
सूणी अर्जुन केरो साद, रीझ्यो पूर्वे तुं साक्षात्;

दिधी ऋद्धि सिद्धि अपार, अंते मुक्ति महापद सार।
कीधो आजे केम विलंब ? तुज विण मुजने ना आलंब!! १०

विष्णुशर्म द्विज तार्यो एम, जम्यो श्राद्धमां देखी प्रेम.
जंभ दैत्यथी त्रास्या देव, कीधी म्हेर तें त्यां ततखेव;

विस्तारी माया दितिसुत इंद्रकरे हणाव्यो तूर्त.
एवी लीला कंई कंई शर्व, कीधी वर्णवे को ते सर्व? १४

दोड्यो आयु सुतने काम, कीधो एने तें निष्काम;
बोध्या यदु ने परशुराम, साध्यदेव प्रह्लाद अकाम.

एवी तारी कृपा अगाध! केम सूणे ना मारो साद?
दोड, अंत ना देख अनंत! मा कर अधवच शिशुनो अंत!!

जोई द्विजस्त्री केरो स्नेह, थयो पुत्र तुं निःसंदेह;
स्मर्तृगामी कलितार कृपाळ! तार्यो धोबी छेक गमार.

पेटपीडथी तार्यो विप्र, ब्राह्मणशेठ उगार्यो क्षिप्र;
करे केम ना मारी व्हार? जो आणीगम एक ज वार !!

शुष्क काष्ठ ने आण्यां पत्र! थयो केम उदासीन अत्र?
जर्जर वंध्या केरां स्वप्न, कर्यां सफळ तें सुतनां कृत्स्न.

करी दूर ब्राह्मणनो कोढ, कीधा पूरण एना कोड।
वंध्या भेंस दूझवी देव, हर्युं दारिद्रय तें ततखेव। २६

झालर खाई रीझ्यो एम, दीधो सुवर्णघट सप्रेम।
ब्राह्मणस्त्रीनो मृत भरथार, कीधो सजीवन तें निर्धार!

पिशाच पीडा कीधी दूर, विप्रपुत्र ऊठाड्यो शूर;
हरी विप्रमद अंत्यजहाथ, रक्ष्यो भक्त त्रिविक्रम तात!! ३०

निमेषमात्रे तंतुक एक, पहोंचाड्यो श्रीशैले देख!
एकीसाथे आठ स्वरूप, धरी देव बहुरूप अरूप,

संतोष्या निज भक्त सुजात, आपी परचाओ साक्षात्.
यवनराजनी टाळी पीड, जातपातनी तने न चीड. ३४

रामकृष्णरूपे तें एम, कीधी लीलाओ कंई तेम।
तार्यां पथ्थर गणिका व्याध! पशुपंखी पण तुजने साध !!

अधमओधारण तारूं नाम, गातां सरे न शां शां काम !
आधि व्याधि उपाधि सर्व! टळे स्मरणमात्रथी शर्व! ३८

मूठचोट ना लागे जाण, पामे नर स्मरणे निर्वाण.
डाकण शाकण भेंसासुर, भूत पिशाचो जंद असुर

नासे मूठी दईने तूर्त, दत्तधून सांभळतां मूर्त।
करी धूप गाए जे एम 'दत्तबावनी' आ सप्रेम,

सुधरे तेना बंने लोक, रहे न तेने क्यांये शोक!
दासी सिध्दि तेनी थाय, दुःख दारिद्रय तेनां जाय! ४४

बावन गुरुवारे नित नेम, करे पाठ बावन सप्रेम,
यथावकाशे नित्य नियम, तेने कदी न दंडे यम.

अनेक रूपे एज अभंग, भजतां नडे न माया-रंग।
सहस्र नामे नामी एक, दत्त दिगंबर असंग छेक!! ४८

वंदुं तुजने वारंवार, वेद श्वास नारा निर्धार!
थाके वर्णवतां ज्यां शेष, कोण रांक हुं बहुकृतवेष?

अनुभव-तृप्तिनो उद्गार, सूणी हसे ते खाशे मार.
तपसी! तत्त्वमसि ए देव, बोलो जय जय श्रीगुरुदेव! ५२

अवधूतचिंतन श्रीगुरुदेवदत्त